

यमुका निवधसा । नृकृष्णकलिका म उ गुनूदवामरु धन ॥ प्रादित्य धननीनेत देवती व उना दन ॥ विगा विम मरुा द
 वस्त्री मीया लय सर्वदा ॥ नीलजीमूत संका ग सीकू दं ॥ ४४ ॥ का म दन ॥ राव गुद्धा म र्ब व ॥ अति ग जा सुथेय व ॥ पूर्य यन
 धनो का ली हत य महिषा मूत्र ॥ गी कू धन राय गुद्धा य ग र्भे ख म्मा य ग न म ॥ ४५ ॥ ति म कु ल उं र व म्मा य न म ॥ ४६ ॥ ति अ र्था दि
 हि ४ र व म्मा पूज य ॥ ॥ अथ कुनिका पूजा ॥ ॥ ग्लाय धा दि निष्कृष्य कृत्वा मूर्ष्टि य हं गु रं । वलु का या ४ पद लानि सर्व इष्ट नि
 व र्हिणी ॥ तथा विस्म विगा वा सि द वानां य तिया दिता ॥ सर्व सत्वांग रूपा नि सर्व गु रू नि व र्हिणी ॥ कु वि क र क र्मा नि त्थं ॥ ॥ नि
 य क्त न म्मा मुग् ॥ ॥ ति कुनिका पूज यित्वा ॥ ॥ अथ कष्टान्न के पूजा ॥ ॥ उं ले क्तां ग नि ग जान न र्क वा डि व लानि च ॥ म म
 स दान क क षाल क न म्मा मुग् ॥ ॥ ति म कु ल उं क षाल का य न म ॥ ॥ ४७ ॥ य र्ग ग र्भ दिना क षे त्र के पूज य ॥ ॥ अथ
 नृ ४ पूजा ॥ ॥ स र्वा य ध म हा मा ग्ग सर्व द वा त्रि मू द न । या य मी म म न न क सा कं ग न व न निरु ॥ ४८ ॥ क ष्ण न न र्क र्थ
 हानार्थं ह न न च ॥ ॥ यी मूर्ति ग र्भे व ध नू न र्क न मा म्भ र्ह ॥ ॥ उं ध नू ष न म ॥ ॥ क न पूजा ॥ ॥ स ग स य ग र्भ र्ह

या लाक मायया ॥ २ हा लजी विनीत श्री ममसेन्यश्च नक्षत्रा ॥ ३ कुन्नाय नमः ॥ ॥ वर्म पूजा ॥ सैम्ये पुरे सैम्ये न
 मने सैन्यया ॥ ३ म ॥ नक्षत्रा लक्ष्मीया हंता यनय नमः ॥ ३ वर्म ॥ वनमः ॥ ॥ अथ वामत्रय पूजा ॥ ॥ नक्षत्रा
 नर्मका नहि महि श्रीनया ॥ ३ ॥ या लाक मायया ॥ ३ ॥ इति निर्गनाम वक्ष्यते ॥ ३ वामत्रय नमः ॥ ॥ अथ कृष्ण पूजा ॥ ॥ यथेष्ट
 ॥ ३ ॥ देय निवाये मी वसुधेना ॥ ३ ॥ तथा मी द्याय कृष्ण युद्ध धनि गरी सदा ॥ ३ ॥ कृष्णाय नमः ॥ ॥ अथ ध्वज पू
 न कलाक महावीर्य ॥ ३ ॥ स्वयं कृष्ण समाहित ॥ ३ ॥ यत्रिना का वने नय सुथना नाय वध ॥ ३ ॥ काथयथा मृगा रुह निगम वि
 वारुनः ॥ ३ ॥ अथ मथा इ नो धर्मा न ॥ ३ ॥ दवा प्रसूदनः ॥ ३ ॥ गन्तुमा मातृ गति स्त्रिये सै निहितः ॥ ३ ॥ साधव मायुष्य ॥ ३ ॥ नक्षत्रा
 साकं निर्यदह ॥ ३ ॥ ध्वजाय नमः ॥ ॥ यथा का पूजा ॥ ३ ॥ इत युध सवा नृदा वायुः ॥ ३ ॥ सा मा मरु यः ॥ ३ ॥ नाग किन न गन्धर्वा य दै
 महान गमः ॥ ३ ॥ नक्षत्रा नाय तिष्ठ ॥ ३ ॥ ध्वज वनू लक्ष्मी तिष्ठ ॥ ३ ॥ यति रुद्रु निर्युत सदा नृना जा विजय मिच्छु ॥ ३ ॥ यानिय युक्तान्य
 निरि ह्य ॥ ३ ॥ नानि समक ग ॥ ३ ॥ निरुतानि सदा तानि ॥ ३ ॥ त्वन्तु वव गसा ॥ ३ ॥ काल नमि व ॥ ३ ॥ ध्वज युद्ध सिद्ध नद्या गम ॥ ॥

यन मलक नमः ॥ ३ ॥ पद ॥ ३ ॥ मष्टादि दवी वाधना दि विधिः ॥ ३ ॥ पश्चादति ध्यायता ॥ ३ ॥ अथ मष्टा मालायाम मष्टा वन विधिः ॥ ॥
 गगानि नृ कु द्वितीयायां स्त्राति न कृष्णयायां कवलाया मष्टा ॥ ३ ॥ अथ माला मना नमानु लिकां सर्वे विष्टां नाना ॥ ३ ॥ कात्रपू
 ध्याली कृष्ण सुध पिता विधा य न मष्टा मष्टा वध न पश्चिम दि नि वसुधया वरु कृष्ण सुध कल्याण ॥ ३ ॥ पवित्र नाना दिना मकुल
 दूर्य कला नृ वव न मष्टा ॥ ३ ॥ सर्व सै पूजाय ॥ ३ ॥ तत्र क मष्टा ॥ ३ ॥ कृष्णय तिष्ठता न्यादाय ॥ ३ ॥ अथ मकला वधायुष्यात पी उषण म
 नने नृ यदी पी युक्त सप्त द्विका मा वव न मष्टा ॥ ३ ॥ सर्व सै पुन मष्टा पूजा यिष्ट ॥ ३ ॥ निर्य कल्याण सपूषा कत मादाय ॥ ३ ॥ द्रुवध्वरु
 गवन नमः ॥ ३ ॥ दोग कृष्ण दिष्टा वा द्रुका पयित्वा ॥ ३ ॥ अथ पक्षि ॥ ३ ॥ पूषा कृता दि निधाय ॥ ३ ॥ नाना नि पाद्या घात मे नीय मानी
 य पुने नाय मनी या नि ॥ ३ ॥ उचै व काय नमः ॥ ३ ॥ नि पाद्या दि दवा ॥ ३ ॥ दम नृ ले पनी ॥ ३ ॥ वव काय नमः ॥ ३ ॥ दम नृ ले पनी ॥ ३ ॥
 नमा देवा धि देवाय पुन द्रव वानि ॥ ३ ॥ सूर्य पूजाय दवाय पुन द्रव वानि ॥ ३ ॥ दिनाय या ॥ ३ ॥ पुन द्रव पवित्र य मष्टा ॥ ३ ॥ यि विधि वा विनि सा
 ध्व मष्टा धि वव क मनी ला मष्टा ॥ ३ ॥ नि पाद्या ॥ ३ ॥ उचै व काय नमः ॥ ३ ॥ नि पाद्या ॥ ३ ॥ लिग य मष्टा ॥ ३ ॥ वनानि ग

[illegible]

यथ० ॥ त्रिविक्रितसंवाचनं वदन्त्यत् ॥ वायथादिषोदिकमन्त्रं ॥ नमो ह्यस्यैव कान्तयत् ॥ ॐ ह्यन्वयं पुनर्न विधिः ॥ ॥
 मृथवित्त्वददीवाधनामन्त्रविधिः ॥ ॥ गणेशिनं पुनः मन्त्रायै नमः ॥ यथाकार्यावासायै कोलवित्त्वान्नमः ॥ त्रिधर्मगन्ताय
 याजजलेषु ध्यात्वा कृतादिकृत्वा ॥ ध्यात्वा विद्वद्व्यायनमः ॥ ॐ ह्यर्थं ॥ ॐ दमन्तयन्तं विद्वद्व्यायनमः ॥ ॐ ह्यनूनयन्तं ॥ ॐ
 विद्वद्व्यायनमः ॥ मृथाजलिगयदत्वा ध्यात्वा यथास्तु नैव श्रवासांसिदया ॥ ततः पुनः कृतमादाय ॐ ह्युव ॥ ह्यहं
 वति ॥ ॐ ह्यगच्छ ॥ ॐ ह्यतिष्ठ ॥ विद्वद्व्यायनमः ॥ ददीमावास्तु ह्येत्यादि ॥ याजजलेषु ध्यात्वा कृतादिकृत्वा ॥ जयन्तीत्यादिमन्त्रं
 ध्यात्वा ॐ ह्यनमः ॥ ॐ निपाद्यादिहि नृपवाने ॥ यज्यत् ॥ ततः गीतवाद्यमंगलधाम्यपूरसमर्पदवा विद्वद्व्यायनमः ॥ ॐ
 नं वावगस्य वधाधाय नामस्यानृपशयच ॥ मृकाले वृक्षे नमः ॥ दद्यात्तु यि कृतापूजा ॥ मृदुमयाधिनं यथा माया
 गवाधयाम्यत् ॥ ॥ ॐ निददीवाधयित्वा विद्वद्व्यायनमः ॥ ॐ मन्त्रं पुनः कृतं ॥ हिमवन्निखनगिर्वा ॥ जगन्नीरुलद्व
 त्वमम्बिकाया ॥ सदा जय ॥ ॥ गीतलनिखनजोतः ॥ गीरुल गीनिकतन ॥ नमः ॥ सिमयाद्वृक्षं यथा इन्द्रस्य दयत् ॥ ॥
 ॐ निविद्वामन्त्रविधिः ॥ ॥ मृथयन्ति कायवर्गनविधिः ॥ गणेशिनं पुनः मन्त्रायै नमः ॥ यथाकार्याकवसांवायु

[illegible][illegible]

लक्ष्मीं हनिदायां इति मानकवामुक्तं कवयत्रियां कालिकां विल्वानिर्वां अण्णकं लभकं नहितां जयन्त्यां कार्त्तिकीं यथकमा
 वासुस्त्राययि न्यायं वापहोने ४३ वृजयत् ॥ कागमहिषादि वलिं इया ॥ सर्वयुधनिवाद्यानि ध्वजानि विद्वानि दवीं गृह्य
 थर्षीनि वर्णस्त्रायय ७ ॥ गाननसुसुयताकादि दवीं गृह्यत यथा ॥ लोभं समुदय ७ ॥ ॥ इति यत्रिकायवर्णनवि
 धिः ॥ ॥ अथ महादेव्यां दवीं वृजविधिः ॥ गृह्यकुरुस्त्रात ४ सुय कालितया निषादः ॥ अवाक ४ उद्वासनया द्यूयाय
 विश्वकलितस्तुलाया दायसं कर्त्तुं विधाय स्मरणदिकमाचनत् ॥ ॥ गणनिवनरुस्य ॥ इन्द्रस्मरणस्य गयन्ति
 थगिनिसुतां वदित्वा कयन्ति ॥ अयन्ति वासुधिरन्धनिर्वां स्मरन्ति ॥ गोत्रीं मूर्त्तिं रुगवतीं उगदकदवीं न विप्रयान्ति यन
 मयदमिन्द्रमील ४ ॥ ॥ उग्रशृङ्गं नृमीलियनमयदया फिकां नारुगवत्या इन्द्रदद्या ४ स्मरणमर्हकनिधौ ॥ ॥ गणव
 स्मरणस्य ॥ यमस्मरणं निगठं त्रिविधं पादाद्याद्यादिद्योतयवद्वि रयव इन्द्रं ॥ तस्मिन्किं विदधि नृगुर्य

६

रुगवत्या

नृदांस्या ॥ इन्द्रं कुम्भकिं मयलस्यसुखं नमन् ॥ उग्रशृङ्गं सर्वरुया रावकां मां इन्द्रदद्या ४ स्मरणमर्हकनिधौ ॥ ॥
 मार्कं (७) ययना ॥ इन्द्रं सुतां नृसिरीति मां गयजन्ता ४ स्वस्ते ४ सुतां मतिमती वलु र्हादयासि ॥ अथातिगयितगुरुमति
 या फिकां मां रुगवत्या इन्द्रदद्या ४ स्मरणमर्हकनिधौ ॥ ॥ निवनरुस्य ॥ यमना गयिसर्वाणीं स्मरन्ति स्मरणं विव ४ ॥ इ
 ध्यायानसं स्मरणं सागनयनं किं ॥ अथ इध्यायानसं स्मरणं सागनयनं रावकां मां रुगवत्या इन्द्रदद्या ४ स्मरणमर्ह
 कनिधौ ॥ ॥ रुविधौ सतर्तं स्मरणस्य ॥ स्वयन्ति वृन् वृजन् वापि विलयनं रुजनं न ४ ॥ स्मरणं सतर्तं इन्द्रं समु
 ध्यं वधनात् ॥ अथ वधनं विमूकं कामा इन्द्रदद्या ४ सतर्तं स्मरणमर्हकनिधौ ॥ ॥ अथ कीर्तनस्य ॥ निवनरुस्य ॥
 ममाया लं जलैव कुरु ममां रुगवत्या ४ नृसिरीति मां गयजन्ता ४ स्वस्ते ४ सुतां मतिमती वलु र्हादयासि ॥ अथातिगयितगुरुमति
 मां रुगवत्या इन्द्रदद्या ४ नामानुकीर्तनमर्हकनिधौ ॥ ॥ रुविधौ नामानुकीर्तनस्य ॥ इन्द्रं नामानुकीर्तनस्य लाक

[illegible][illegible]

ये ॥ १ विमलये ॥ २ लोये ॥ २ नवधये ॥ २ कोलिके ॥ २ मये ॥ २ इन्नेये ॥ २ क्रियाये ॥ २ नृधये ॥ २ चक्षये ॥
कधुये ॥ २ कपालिने ॥ २ नीये ॥ २ काली ॥ २ मये ॥ २ जिनगये ॥ २ स्वरूपये ॥ २ वक्ररूपये ॥ २ विरूपये ॥
१ अमिकाये ॥ २ चित्रिकाये ॥ २ सूनपूजिताये ॥ २ वैद्यये ॥ २ कोमाये ॥ २ मोहये ॥ २ वैष्णवे ॥ २ महालये ॥
२ कार्त्तिके ॥ २ लिवदूये ॥ २ वामूये ॥ ॥ ॐ तिस्रथके मा वा स्रक्का पयि वा पाशा र्पा व मनीया दि हि नृ प वा नै व ता
४ पूजये ॥ ॥ अथ मातन ॥ ॐ इन्नेये ॥ २ मोहये ॥ २ कोमाये ॥ २ वैष्णवे ॥ २ वानाये ॥ २ ॐ दुलये ॥ २ स्वा
मूये ॥ २ महालये ॥ ॥ ॐ निपूर्व दिक्क मध्व वि का पूजये ॥ ॥ मातुणा पूजता रा ॥ ॐ हे न वा य न म ॥ ॐ
या दि हि नृ प वा नै व नै र्म पूजये ॥ ॥ अथ जानि ॥ ॐ कोलि कालि मा दा ॐ इन्द्रयाये ॥ ॐ कोलि वज्र व नि क व
याये ॥ ॐ बा प्र या दि मू ॥ ॐ कालि ला इन्द्रयाये मू माये ॥ ॐ निपूर्व दि दिक्क ॥ ॐ कालि वज्र व नि ला इन्द्रयाये

[illegible]

विलयय ७॥ सखमेक नर्तवर्ष नकुला कमहियत ॥ वन्दनगुनकथन ४ समरुणे ४ समीयाद लुगत्वा दिति न्याया ॥ स
 भक ४ संवत्सन ४ दिव्यदर्वी ॥ अथ दिव्यसंवेक न गता वक्षिन्न नकुला कमहितत्व कामा वन्दे गुनकथने इमं दिव्या अनूले
 यनमहं कनिष्ठा ॥ ॥ वरु ४ समानूले यस्य ॥ वन्दना गुनकथने ४ नृद्वयिष्टे ४ स कृद्वमे ४ इन्मर्मिलिपु विविक्तकल्प
 काठिवसे दिवि ॥ अथ काठिवर्षा वक्षिन्नस्य गन्ता का धिकनग वा प्रापि काम स्यन्दना गुनकथने कृद्वमे ४ गवया दद्यात्तु
 लयनमहं कनिष्ठा ॥ ॥ दवीयूना ॥ ॥ वरु ४ समानूले यनस्य ॥ मदकथनिका कान्भीर्न प्राचना च वरुष्टय ॥ पुनर्न दवी सर्वका
 मानवा प्रया ॥ मद ४ कसुनिका ॥ कान्भीर्न कं कर्म ॥ प्राचना ॥ अत्राचना ॥ अथ सर्वकामानवापि कामा प्राचना कं कमादि वरुणम
 दद्यात्तु अनूले यनमहं कनिष्ठा ॥ ॥ अथ पूष्या नि ॥ तृणदवीयूना ॥ विहितपूष्यामास्य ॥ तयनील गुलाय न याग वदस्य
 यान ॥ ॥ दगदत्वा सुवर्णं नियतुर्लक्ष्मिभूत ॥ अथ तय नील गुलाय न वदया तगवा इन्मर्मिलिपु दानकदग सुवर्णं दान
 अन्यरुल यापि कामा रुगवर्ति ॥ इन्मर्मिलिपु कृजयिष्ठा ॥ ॥ उइन्मर्मिलिपु नम ॥ इति निवदनी ॥ अथ पूष्या विगमनी ॥ मलि

१६

कामत्यलीयद्रागमीयूना गवम्यका ॥ अन्मर्मिलिपु कान्भीर्न प्राचना च वरुष्टय ॥ पुनर्न दवी सर्वका
 त्री ॥ य ४ यय कतिपूष्या ॥ य पूष्या योता निरात्रत ॥ वलिका येन लुके रुकाय नमयायूत ॥ सकामानसिलान् पाप्य इन्म
 यानूवना रुव ॥ सन्धिश्चान्दसत्वा ॥ अथ खिल कामायापि पूर्वक इन्मर्मिलिपु वनत्वरुवन कामनया ॥ मीरि ४ समल्लिका
 कसुमे ४ रुगवती देवीमहं पूजयिष्ठा ॥ उत्पलयद्रागमीयूना गवम्यका ॥ के कलि कार्ने डालपूष्या कनवी नमी
 पूष्या कसुमदना गकन नपूष्या ४ पूजन यो नदवरुली ॥ ॥ दवीयूना ॥ ॥ पूष्या विगमनी ॥ यूनग गम्येक ४ कन्दोयुधि
 कानवमल्लिका ॥ तगना इन्मर्मिलिपु वदहती न तयगिका ॥ तथ कसुमदकद्रा वविल्लिया डलमालती ॥ जवा विवकिलो ॥
 कनकनीलोत्पलानिव ॥ दमनामनूय रुगवती गवम्यका ॥ अथ नयूष्य कनवर्क दीपूजन अन्यपूष्या यूनग
 तगुल पूष्या वदिकाम नृति ४ कन्दयुधिका विल्लजा तीपूष्या इन्मर्मिलिपु देवीमहं पूजयिष्ठा ॥ ॥ कतकी कसुमादिना
 वनस्य ॥ कतकी वाति मूक ४ वन्धूक कसुमा निव ॥ कदम्ब ४ कलि कान्भीर्न प्राचना च वरुष्टय ॥ अथ समृद्धि काम नृति ४

कनकीक सुमेरुगवती इन्द्रादेवी पूजयिष्य ॥ वनू कार्त्तनादिनाथातदवहल ॥ कालिकापूजा ॥ विलुपराष्टनमः ॥
 सर्वग विलुपराष्टनमः ॥ अथपुनरुज्ज्वलितकामा अतिविलुपराष्टनमः ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥
 देवीपूजा ॥ अथविलुपराष्टनमः ॥ विलुपराष्टनमः ॥ अथपुनरुज्ज्वलितकामा अतिविलुपराष्टनमः ॥
 न ॥ अथविलुपराष्टनमः ॥ अथपुनरुज्ज्वलितकामा अतिविलुपराष्टनमः ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥
 देवी पूजयिष्य ॥ ॥ देवीपूजा ॥ विहितपूष्यपराष्टनमः ॥ रुक्मा निवदयत्सर्व नाशुकि किष्किदापुत्रा ॥ अथ सर्वलुका ॥
 नवाफिकाम अना निविलुपराष्टनमः ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥ ॥ रुक्मा ॥ अथपुनरुज्ज्वलितकामा अतिविलुपराष्टनमः ॥
 दग निष्कुरुलं नृप ॥ अथपुनरुज्ज्वलितकामा अतिविलुपराष्टनमः ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥
 ह्येकमुद्रा मर्द दद ॥ ॥ अथपुनरुज्ज्वलितकामा अतिविलुपराष्टनमः ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥
 थ ॥ अथपुनरुज्ज्वलितकामा अतिविलुपराष्टनमः ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥

मानानि वक्ष्यन्ते

विजगवते तु नमः ददे ॥ ॥ अथपुनरुज्ज्वलितकामा अतिविलुपराष्टनमः ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥
 कमदिनल कामा अतिविलुपराष्टनमः ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥ मूलमकमः ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥
 ॥ अथपुनरुज्ज्वलितकामा अतिविलुपराष्टनमः ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥
 थ ॥ ॥ वकपूष्यमालाया ॥ वकपूष्यमालाया ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥
 यरुज्ज्वलितकामा अतिविलुपराष्टनमः ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥
 पूष्यमालाया ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥
 मदिनल कामा अतिविलुपराष्टनमः ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥
 दया ॥ ॥ मूलमकमः ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥
 ममीपूष्यमालाया ॥ इन्द्रादेवी मर्द पूजयिष्य ॥

[illegible]

२५३

[illegible]

सर्वे ४१

[illegible]

गम्या॥ अन्नं वायस्य पितृषु त्रिकायपरुक्क कमलु कयुरु नि सिद्धान्तं ॥ ॥ अथ वैष्णव यागज न्य बुल पाफिका मां तुल खलु अ सं सिध
नानि इर्जोदयो गुह्य मर्द दद ॥ घृत पक्वान्ना नां ॥ गुह्य खलु कृगाना धी नथ गं कृत्रयान् प । घृत नय त्रि पक्वाना पदाना द्वा द्वा
८४ पदं ॥ पाप्मा नीति वि (अ) ष ॥ अथ यज्ञ पद पाफिका म च ना नि गुह्य सा धि न घृत पक्वाना नि इर्जोदयो गुह्य मर्द दद ॥ ॥ अथ
दन नैव दद्यात् ॥ गल्ल्या दन न मानां च पार्श्व दन ज कथ । यथ यय कृति इर्जोथे सग कृति निवालय ॥ वदन पान स्य ॥ अथ निवाल
य गमन कामं मं वदन पान कं इर्जोथे गुह्य मर्द दद ॥ पान कल गं वैद्य गं ॥ मन्त्रे उक्त मल म्भ्या पान कं सूत्र ही कर्मा । नद वखलु
मृच्छी का गं कृत्वा सदिर्ग पून ॥ साम्भूती क्री सुदि मं पान कं सा निवलय । पत्र काला को लो नां कृत्वा पिष्ट हि पान कं ॥ श्री लानां वदना नां
वायसं घृत मं यूक्तं गं कृत्वा सदिर्ग न न ॥ यथ यय कृति इर्जोथे तस्य नाथं कर किं ॥ अथ कर किं न नाथ पाफिका मर्द दं संघटन मर्क
ना वायसं रग वर्ये गुह्य मर्द दद ॥ ॥ कालिका पूगा ॥ ॥ अमिषान् पत्र मान्त्र श्रुद धि वायस गं कृत्वा । सदा दयो निवधे व वाजि मध

रुलील ७॥ अथ मधुलया फि कामदं सगर्कं न पायसं रगवर्धे गुह्यमईदद ॥ ॥ सगर्कं नादधिदानं यत्तदवर्धुली ॥ घृणख
 लुक्ता नानि चूपा न ॥ अथ मईदं धर्मा फि कामघृणखलुक्ता न चूपा न रगवर्धे गुह्यमईदद ॥ ॥ सखलसा धिगमोदकादी
 न ॥ नगदवर्धुली ॥ अथ सगर्कं ना रकस्य ॥ अथ सौगमलियागजय समरुलया फि काम व नानि सघृण रगर्कं नानि रगवर्धे गुह्यम
 ईदद ॥ ॥ कर्तकी कर्पूत्र वासिगजलस्य ॥ रुविष्ठा ॥ इन्मसूदि श्रपाणीयं कर्तकी गनि वासिग ॥ यथय कृतिना जय सगका २१
 धिपतिर्कृ ७॥ अथ गला धिपति त्वरुवन काम ४ कर्तकी कर्पूत्र वासिगजलं रगवर्धे गुह्यमईदद ॥ ॥ नालिकला दिरुल
 दानस्य ॥ रुविष्ठा ॥ अथ ३ नालिकलस्य खर्हू री वीज पूनकी ॥ यथय कृति इन्मये सगकृति पनी पदी ॥ अथ पनम पदवा फि का
 मनया ॥ नानि नालिकला दिरुलानि रगवर्धे गुह्यमईदद ॥ ॥ अथ सखर्हू नादि दानं यत्तदवर्धुली ॥ ॥ दवी पूना ॥ रुलमा
 शनरी ॥ रुलमूपकस्य ॥ रुका निव दयस्य र्वा रुर्हू किष्कि ना पूया ७॥ विष्णु धर्मा कृता ॥ वरुलुल दानं स्य ॥ रुलानि दला दवयः

सरुली विदुत क्रिया ॥ अथ क्रिया सा रुलया फि काम नानि कदला दिरुलानि रगवर्धे गुह्यमईदद ॥ ॥ ला रुली कसूकं दला
 नूचकं कनमईदी सो राय मगुलं पाय दवी लाक मदीयता ॥ ला रुलानि कवर्क ॥ कसूकं गुवा रुली ॥ नूचकं वीज पूनकी ॥ कनमई
 दी पानीया मलकी ॥ अथ गुलसो राय पाफि पूर्व कदवी लाक मदिगल काम नानि कवल रुलानि युग रुलानि पानीय रु
 लानि वनस्य निदी वतानि रगवर्धे इन्मदि यो गुह्यमईदद ॥ ॥ कालिका पूना ॥ ७॥ रुका निव दय दवी दक र्वा निगुं प्या नि ॥ रुर्हू
 रुर्हू चले ३३ यथार्थ वपं वमी ॥ पनमानं पिष्टक ३ या वकी कसून तथा ॥ मादकं घृण कादी निपका निव मई ७ रुविष्ठा ॥ नालया द
 नं दिवा माय पूकी नर्कतया चरी ॥ निवदय मलादय सखनि य ३३ नानि व ॥ कीनादी न्यथ गयानि मदिषानि व सख ३३ सख र्वा रुलजा
 गीनी मधु दवी पिष्ट रुली ॥ नागलंग कवि रुक्म ३३ नाक मूक मववा कवर्क नूचकं काली कृष्णार्ण पनसकथा ॥ वरुलुल ३३ मधुर्क व
 वसा रासागक अपि ॥ अकारं पिष्ट रुवर्हू री कवर्क वरुलुल निदी ॥ ओरुम्वन ३३ पनसं निपूर्व कर्क ठी रुली ॥ जाम्बव वा पिष्ट रुवर्हू री वी

उपर्युक्तमूलं। दत्रीगकीचामलकं पद्धिर्धनगत्रगर्कं॥ २४॥ चर्ककं (गत्रग) लूकप्रमृत्तलकं॥ २५॥ वसादीनिवाद्यानिद
 योमर्कलिखात्तु०॥ सर्वगुह्यमिष्टिनिष्ठलं॥ ॥ कावकनस्य॥ अशुभगणानिबकामनया० कावकानदलुगवर्धुय
 मर्ददद॥ ॥ धूपितजलस्य॥ अशुभमिष्टिगिकामनयाधूपितजलं रगवर्धुयमर्ददद॥ ॥ गामूलदान॥ अशुभमिष्टिनि
 काम० गानितामूलानि रगवर्धुय इमर्ददद॥ ॥ वसुदान॥ वसुदानेनलाकस्मिन् सुवर्गस्त्रिजायग॥ अशुभ
 वधत्वकवनकामं० इमर्ददद॥ ॥ गनुसुतानसन्निधौ नक्षिर्गगवसुना॥ इन्द्रदेवितुङ्ग्यानिवासकपवि
 धीयतामिति॥ ॥ रुविश्व॥ वसुलि सुवि विगलि नूत्नालिवमृदूनिव। यष्टयकृति इमर्धे सगकृतिनिवालय। यावत्कृत्
 वावत्कृत्पत्रिकीर्तिगा॥ तावद्वर्षसहस्रालिभादतवलि कालय॥ निवालय इमर्धिलि॥ अशुभनिवालयगमनकामसुदुर्गनु
 ससर्गसहस्रवर्षावच्छिन्नवलि कालयमर्धकाम० गानितुष्ट० वसुलि रगवर्धुयमर्ददद॥ ॥ पष्टवत्कृत्पत्रिकीर्तिगा॥ ॥

अथालं कनकादान॥ अर्कं कर्तुं गुयादद्या० विषायाथ सुनायवा। सगकृत्तुल्लं लार्कं तानारुवणरुषिर्ग॥ जात० पृथिव्या कालनगतादी
 यपतिर्कृत्०॥ अर्कं काशामूकस्यदिक०॥ सुनायजिपृथिव्यापिलकृत्तु इमर्धे पदानं पीदंरुलं॥ अशुभानारुवणरुषिगात्मकवात्रललाक
 गमनपूर्वकमूलककदीपयतिरवनकामं० इमर्धमलकं रगवर्धुय इमर्धे पृथिव्यामर्ददद॥ ॥ विष्णुवेमर्धिने॥ विष्णुषणवदा
 नननाजारुवणिरुगल॥ अशुभरुगलाधिकनलकनाजुत्तववनकामं० इमर्धमलकं रगवर्धुय इमर्धे पृथिव्यामर्ददद॥ ॥ श्रीरव
 रूयवलयदानाथलं कनकादान० तदवर्धुलं॥ ॥ रुविश्व॥ सुवर्धुजिलकं यमुकगवर्धुय यष्टयकृति। सगकृतिपत्रिकानं यग
 सापवमाकला॥ अशुभपवमकलात्मकत्व इमर्धे विष्टिगमनकामं० इमर्धे सुवर्धुजिलकं इमर्धे पृथिव्यामर्ददद॥ ॥ इमलावन
 या॥ सीवर्धुजिलकं यमुवलि काथे यष्टयकृति। सगकृत्तुल्लं पाथ सुवर्धुलाकमदीयग॥ अशुभसहस्रपदानरुलं सुवर्धुला
 कमर्धित्वकामा इमलावनरगवर्धुयमर्ददद॥ ॥ इमकाशरी॥ अलीसुवर्धुपदानेन मर्धे सागवभखली। यसास्मिनि

हतामिना नारकाया विद्यावत् ॥ अथ गुरु निरुतन दूर्ध्वकसागरवलपितमहि ॥ वृकामरु माद्रुमकाधरी रुगवर्षे मुख्यमर्हदद ॥ ॥
 रुमनूपनस्य ॥ यादारुनलदानन स्मर्तन सर्वगविन्देति ॥ अथ इन्मधिकितस्मानलारुकाभा रुमनूपनो रुगवर्षे मुख्यमर्हदद ॥
 रुमयुष्यस्य ॥ अथ इन्मधिकनलकनिवासकाम ॥ रु १ सुवर्णयुष्ये रुगवर्षे इन्मधिके मुख्यमर्हदद ॥ ॥ विष्णुधर्मा रुमनूपन
 र्णदानस्य ॥ नन १ सुवर्णदानन सदान्नाकामान्मधूत ॥ अथ सर्वकामावापि कामरुर्द सुवर्णमग्निदेवरी रुगवर्षे मुख्यमर्हद
 द ॥ ॥ वसुदानस्य ॥ निवन्तस्य ॥ दाधूयतकनकदलुविनाजितस्य सदान्मन १ पलयककुलसुन्दरी रु १ दिद्युसगन्धेन नूले
 यनरुषितांग १ कृत्वा मृजानिरुवन वनवसुयुजा ॥ अथ कनकदलुविनाजितवद्रुसदानमनकनकवद्रुसुन्दरी वाद्यमानेले
 दिद्युविनसुगन्धे रुषितांगत्वकामरुर्द यद्रुवर्षे रुगवर्षे मुख्यमर्हदद ॥ ॥ वद्रुमयागदानस्य ॥ रुविष्यपूना ॥ ॥ नेत्रि
 कस्य रुपागानि इन्मथिय १ पुयकृति ॥ तस्य पूरुल्लेखार्क तानागलयददिवि ॥ नेत्रिकस्य सुवर्णस्य ॥ अथ लोकाधिकनलक

ल्य

दनि

तानागलयपि कामरुतानिरुमयागानिरुगवर्षे मुख्यमर्हदद ॥ ॥ न कृत्वा यद्रुवर्षे विकल्प १ ॥ मुख्यमाश्रया ॥
 वाद्य ॥ ॥ नाजगयागदानस्य ॥ निष्ककाठिसुवर्णस्य यादद्याददयान ॥ इन्मथो १ रुलमेव तु नजगस्य तगाधि
 की ॥ नजगस्य यागदयस्य ॥ अथ वदयानगवाद्यनस्य यादानकनि १ ककाधिवक्त्रिन् सुवर्णदानजन्य रुलाधिकरुलपापि
 कामरुर्द नजगयाग रुगवर्षे मुख्यमर्हदद ॥ ॥ मन्मथयागदानस्य ॥ गमयागदाननय रुलमेव दयान ॥ तस्मा
 कृतगुलीधार्क दत्वा मन्मथमादेना ॥ इन्मथे यादुयादीन स्यात्तथा नागसुगय १ ॥ मन्मथयागविना १ ॥ अथ वदयानमवा
 द्यनस्य यादानक गमयागदानजन्य रुलपापि कामरुमन्मथयाग रुगवर्षे मुख्यमर्हदद ॥ ॥ दवीमानयुजा ययागिकल
 नादिदानस्य ॥ विष्णुधर्मा रुम ॥ उयस्कान १ यदानन लियमाप्राप्तनू रुमी ॥ उयस्कान १ स्मानरुजाम्मयागिकलनादि या
 गानिरुगवर्षे मुख्यमर्हदद ॥ ॥ दयैगदानस्य ॥ रुविष्य ॥ वल्लुनिर्मलसुवर्ण दयैलीमनिखित ॥ ययनक १ रुहिनी रुला
 नानामाल्योयलेयने १ ॥ इन्मथो १ यत्रत ॥ मन्मथ १ रुदयायनयान्वित १ ॥ नाजसुयरुल्लेयाद्य रुमलाकम हीयत ॥ रुम १ रु
 य १ ॥ अथ नाजसुययरुल्लेपापि दूर्ध्वक र्दसलाकमहीगत्वकामा रुगवर्षे मुख्यमर्हदद ॥ ॥ अथ कदानस्य ॥

दयैली

य

गिवनदद्या ॥ दद्याच्चयः परं किं युता क्वाथ ॥ यथा विना नमथ वामन मातयः । कयूनदानमलिकुल लक्ष्मिमी नत्ताधिपारवतिरु
गलवकवर्ति ॥ अथ कयूनमलिकुल लक्ष्मिमी नत्ताधिपारवतिरु गलवकवर्ति कामः ॥ दं कुरु मूकानां किं नं रुगवर्तिरु गलवकवर्ति ॥
कनकदलधवलकुरुदानस्य ॥ रुविष्य ॥ शिवकुरुदं सुकां प्रवालमलिकु विर्गं दं मदलु मयं कुरु इअयि यः प्रयच्छति ॥ सकुरु
विविधं किं किं लीजालमालिका ॥ धाय मा ॥ नालि न सिद्धनला के मदीयता ॥ अथ विविध किं किं लीजालमालि मसुका पविधाय मा ॥
बुद्धकनक कुरु नला के मदीयता कामः ॥ दं कुरु मयं कुरु मूकानां किं नं रुगवर्तिरु गलवकवर्ति ॥ ॥ विष्णुमा
कुरीय कुरुदानस्य ॥ यानं गायामनं कुरु पादक वा वा पानदी ॥ वादनं गायामनं कुरु सिद्धनला ददा गियं न के कसमादवाप्राति वेनि
॥ मरुलनन ॥ अथाग्निशमय कुरु कुरु लया पिकामः ॥ दं कुरु मूकानां किं नं रुगवर्तिरु गलवकवर्ति ॥ ॥ सितकुरुदानस्य ॥ राज
लिगसदानेन राजारुवति सकितो ॥ राजलिगः कनकदलसितकुरु वामनादि ॥ अथ किं निराश्रया किं कामः ॥ दं वामनं वायुदेवतं
रुगवर्तिरु गलवकवर्ति ॥ ॥ गिवनदद्या वामनदान ॥ अथ कयूनदानमलिकुल लक्ष्मिमी नत्ताधिपारवतिरु गलवकवर्ति कामः

दं वामनं रुगवर्तिरु गलवकवर्ति ॥ ॥ गामदल वामनस्य ॥ रुविष्य ॥ गामदल विविधं दे इअये संप्रयच्छति । परं कुरुनं समासाश मादुधं
लाकयुजिगी ॥ अथ लाकयुजिगी मादुधं पत्रमसुका नगमेन काम गामदल वामनं रुगवर्तिरु गलवकवर्ति ॥ ॥ कनकदलस्य ॥ अथ कुरु वि
विधं यः वामनं संप्रयच्छति । वायुला के समासाश कीरु वायुलि ॥ ॥ अथ वायुला के वाफिकामा रुगवर्ति विविध कनकद
ल वामनं रुगवर्तिरु गलवकवर्ति ॥ ॥ सीवधुनि सीवधु चटिगना ॥ अथ वधुला के मदितव कामः ॥ दं सर्वसुवधुदल वामनं रुगवर्तिरु गलवकवर्ति
दद ॥ ॥ मलिदल वामनस्य ॥ अथ यथाश्रमनं दत्ता मलिदल विरु विर्गं । सुवधुनीय विरु कुरु इअं लोक मदीयता ॥ अथ इअं लोक म
हितव कामः ॥ दं सीवधुनीय विविध मलिदल विरु विर्ग वामनं रुगवर्तिरु गलवकवर्ति ॥ ॥ मयूरपक वाजनदानस्य ॥ रुविष्य पूमा ॥
मयूरपक वाजनं नानावधु विविध किं । रुगवर्तिनमादत्ता लक्ष्मि सुवधुके ॥ वधु सुवधु संकुरु विरु वरुलमित्यर्थः ॥ अथ वधु सुव
धुयक समज न्यरुलया पय मायूरपक वाजनं रुगवर्तिरु गलवकवर्ति ॥ ॥ विविध कर्माणि ॥ गिवनदद्या वामनदानस्य ॥ गालवर्ति म
दावा विविध कर्माणि ॥ गिवनदद्या वामनदानस्य ॥ गालवर्ति म

[illegible]

तिरुसिगयेवाद्युभरुचसमयस्मन॥
 इन्द्रुत्वेसयत्नानाधानादुदयैयन॥
 थमुतवेगधनेरुषास्माकंजयावरु॥
 विष्णुनात्वंधनानित्यमग॥
 न॥ इक्ष्वाधर्मद॥
 यम॥
 नमो॥
 क॥
 रूपा॥

[illegible]

॥ वल्लभाय नमः ॥ ३

कोमा श्री ६

[illegible]

[illegible][illegible]

लं लज्जावना वधुं नूडवधुं । आनया अग्निवधुं पवधुं । याम्ब ककुवधुं वल्लभ नैर्मह्य नीलवधुं ।
 यिका वानूयं उक्रवधुं वल्लभ वायव्य धूमवधुं वल्लवनी सोम्य पीतवधुं वल्लभ्या वल्लभ वालुवधुं अग्नि
 वल्लिका ॥ सर्व धातुगुजा मूर्द्धजखटक पल्लभं दग्धं तज्जनी मधू मूर्द्धज उमनू पाप्मनिगवामधुका ॥ मूर्द्धन शूलव
 क स्वर्गाङ्गु शत्रवक गलाकाविगदकिलकना ॥ मध्व अग्निवधुं उग्रवधुं । अमृतादनी गुजा धूर्वाकश्चाननसूयायका ३२
 कमशाङ्गी इन्द्र इन्द्रनकुलिखादा ॥ उग्रवधुं यिनमः ॥ उग्रिदाद्या दिक्थापवात्रे ४ संयुज्यत ॥ वाद्यादिदल ॥ उग्र
 वल्लभ्यै १ ॥ उग्रवधुं यै २ ॥ उग्रवधुं यै २ ॥ उग्रवधुं यै २ ॥ उग्रवधुं यै २ ॥ उग्रवधुं यै २ ॥ उग्रवधुं यै २ ॥ उग्रवधुं यै २ ॥
 यै २ ॥ विल्लादिक सुमेवय्यार्तता मध्व ॥ उग्रदयादिवतः जनसंयुज्य ॥ अमृतादि सिंहासनाकं युज्यत ॥ स्वस्वदिक दललाकया

लान्तरदशानि, वाष्पादिना की ४ ययुजय ७ ॥ यथा विरुववस्मादि माल्यालंकारे ४ ययुजय ७ ॥ तताः १३३ लि वक्षः ॥ ॐ इति निवा
नान्तरिकनी ॥ ॐ मदिषधि ०० त्यादिना ययुजय ७ ॥ तता गीत वाद्यादिभूतकेन त्यादिना सीता ॥ ॥ तद्वर्क निव वक्षः ॥ याजा
गत्र निविमृतास्त्रिता ददति ॥ ॐ स्वादिदि वसव्यपि नृयनाद ॥ वीक्षसुवल् मधुनस्य वरा विनीति ४ संगीयन सुदिक ॥
दवि किन्नरीति ४ ॥ ददति कवीति ॥ अथ महाष्टम्यां वागीजागत्र मर्क विष्णु ॥ ॥ विष्णु वर्मो वक्षः ॥ गीत वाद्य पदानेन नृ
यथाप्राप्त मूर्कमा ॥ यकलीय पदानेन नृ पवान्ति जायत ॥ यकली यं नृयं ॥ अथ नवमी कर्ण ॥ गगन लाक निद्रा पृजा ॥
पागदयनित्य क्रिय स्वावान् ४ पाशुरवा पवथ कृण तिलजला न्यादाय ॥ अथ महान वम्या पवमे भव्य पा फि कामः २ लाक
निद्रा भव्य वी मर्क ययुजयि ॥ ०० ति संकल्प रूप लिफ त लुल काष्ठादि मय व लिका लर्क शि २ ली निपा यस्त्रा ययि द्वा यय
य ॥ ॥ ॐ मना हू गीति मर्क वय निष्ठा प्य मयूष्या कृतमादाय ॥ ॐ गग वति व लिक ०० लाग क ०० ह निष्ठ या वाद्य कृपा

यित्वा एतानि पाद्यादीनि रुग्णवर्धनं वृद्धि कारयेत् नमः॥ चन्दनपुष्पधूपदीपनानि ताम्बूलादीनि भेषजानि वस्त्राणि वल्लिकाय
नमः॥ ॐ निद्रयाऽपुन किं कृतं नमस्तुभ्यं सारलं कृतं हृदये समाश्रित्य समन्तं ध्यात्वा वल्लि वामनादि (गमना) त्विह नाना
वादिनिर्धारेण देवालयं नीत्वा इन्द्रादिद्याऽपूनाऽष्टकापयेत् ॥ तत्र विषयापवायेऽपूजयित्वा पूजा कृत्वा नमस्कृत्य
॥ ॐ मन्त्रिषु मन्त्रा माये ॐ ह्योदि ॥ कृष्णमनसमालम्ब्य चन्दनमनविलिपितं । विलम्बयन् कृतावीठ इन्द्रादिगणगण ॥ ॐ
निपठित्वा कृमश्च निविसर्जयेत् ॥ ॥ नवम्यादि वीपूजा ॥ रविश्वा ॥ मासिवाग्नेयूजवीर ॥ कुक्कुपकृति ॥ लिनी ॥ नवम्यापू
जयेत् शुभमुक्त्यापूजयेत् ॥ ॐ शुभमयं सद्मस्य वाङ्मयं गतस्य च । तत्कुलं ललितं वीरदवीदवगलेष्टं ॥ लिनी
इन्द्रा ॥ ॥ पञ्चोपवायेऽपूजयेत् पूजा कृत्वा कनकवर्णपाथयित्वा ॥ कागदिमन्त्रिषु वलिदानं ॥ पूजा कृत्वा तस्य कल्पं ॥
ततो मातृगणपूजा ॥ तत्र कृष्णगयनिलजलाद्यादाय । ॐ शुभं नित्यं निवासनायुधिकवला सांघोमादिकसर्वरथोराव (गमनं)

विषयः सुद्विजय रूपवत् कृत्वा लवे विनिवृत्ति मूर्ति कृत्वा मातृगणाय यथा कामपर्यन्त वर्षे नमः निवृत्ति कामावकाश
दिमातृवत् कृत्वा नमस्कृत्य ॥ ॐ निर्विकल्पा चन्दननामदलपत्रमालिख्य मन्त्रेण वृद्धि कारयेत् पूजा कृत्वा मादाय । वस्त्रालिङ्ग
कागकृत्वा वाङ्मयं कृत्वा पाथयित्वा मातृगणाय नमः नीयन् नराचमनीयानि धूपदीपनाम्बूलादीनि भेषजवर्धनं ॥ ॐ वस्त्रालिङ्ग नमः॥
ॐ निद्रयाऽपुन कृत्वा ॥ सर्वश्रेष्ठं दीपनार्क ॥ ॐ मन्त्रं वयेत् ॥ ॐ श्रीमन्त्रं ॥ ॐ वैष्णवी ॥ ॐ वामाक्षि ॥ ॐ नानासिद्धि ॥ ॐ नन्दी ॥ ॐ
निवृत्ति ॥ ॐ वामाक्षि ॥ ॐ निद्रयाऽपुन कृत्वा ॥ शुभमातृगणायऽपूजयित्वा वलिदानं ॥ कृष्णगयनिलजलाद्यादाय ॥ ॐ कल्पं (गमनं) पति
पूजा गणवन्दनादिना कृत्वा कर्मलमालिख्य पदकिं कर्मलवाद्याद्यदलं ॥ वाग्नी मातृगणायऽपूजयित्वा वामाक्षि वामाक्षि वामाक्षि नाना
सिद्धि नन्दी निवृत्ति वामाक्षि ॥ ॐ निवृत्ति मातृकामावाङ्मयं कृत्वा पाथयित्वा पाद्यादि विनियोगेन वर्य ॥ चन्दनदीपाऽपूजयेत् ॥
ॐ ह्योदिकर्मलदीपाऽपूजयेत् ॥ ॐ वस्त्रालिङ्ग ॥ मातृगणायऽपूजयित्वा वलिदानं ॥ ॐ निवृत्ति मातृवत् कृत्वा विधिः ॥

अथ कुमारी पूजा ॥ उँ अथ विन उँ कृष्ण मन्त्र नवम्यादि विषय साद विविध मन्त्रादी सुकामा वाफि नाद्याधिक नदी मूर्तद
 वीलाक गमन काम धर्मा सुकामात्री चहं राज यिष्ट ॥ ॐ नि संकल्प्य कुमारी चित्र लंका नदी विषय लु वासन नृ नि सुक
 मात्री ४ पादुखोप विधा र्च मना रू गंध पूष्य माला दिह रू चले ४ स वि धं समस्त रू खलु भाद कादिना नारु रू ४ गने ४ गने ४
 यथ सुखी राजथ ॥ न तस्मात् सा माच मना दि कंदला रुम धे ति वि सृज्ये ॥ ॥ ॐ नि कुमारी पूजा विधि ॥ ॥ नव वाक्म ३४
 नृप मज्जनानु विविध रू कादिना तावथ ॥ ॥ अथ इति मादा ल्ये व ॥ उँ अथ दियथ नि मर्ग संकल्प्य लु या ॥ ३४
 वाच काय दक्षि ॥ दद्या ॥ ॥ अथ क्षाम विधि ॥ अथ रू रू का विधि नाग्नि स्थापन कला वक्ता यव गना दिक म विषया वाक्
 शान्ति रू का नि संयुक्त ॥ उँ अथ की मद्रता काली ॐ ह्यादि मरुत स्थापन कन शि मयु तिले नक्षत्र गत मा रु नि रुत्वा रू रू का
 म संसादि विदध्या ॥ ॥ अथ ध्वज लाया न वका दिव्या विधि ॥ न त ४ क ग निले रु ला न्या दय ॥ उँ अथ मद्रान व म्या

सकला रू का ता पीठा म नि नेत्र द्य दीपो य ॥ सम द्दिका भात्र वक्ता रू व र्म यज्ये ॥ ॐ नि संकल्प्य रू लु ला प वि पूष्य कृत
 मादा य न वक्ता ॐ द ग रु ॐ द नि रु ला दिना वाक् स्थापयित्वा ॥ न ता नि या द्या वि मनी य स्तानी य न ना व मनी या नि ॥ उँ अ
 व का य न म ४ ॥ पा द्या दि द रू ॐ द म नू ले प र्ण व का य न म ४ ॥ नि ॥ न भाद वा वि द वा य नि पू र्वा कं ॥ अ क प ॥ ०० ॥ ॐ नि
 प रित्या न व का य न म ४ ॥ ग ला दि धू प दी पा दि ता मूल ने व द्या नि उँ अ व का य न म ४ ॥ न ता रु रू नि व द्या ॥ सूर्य पूष्य मद्रा वा द्या कया
 रु द य न न द न त्या दि सु त्या य न म ० ॥ का ग दि व लि दि द्या ॥ नृ प दी द द्या ॥ अ द दी ति ॐ म व र्म वा र्थ ये ॥ ॥ ॐ नि अथ पूजा वि
 धि ॥ ॥ अथ देवी वि सृज्ते ॥ द ग म्या य व ल न क रु यू ता या क व ला या म्ब ला ग ४ पा द्या वि मनी य स्तानी य न ना व मनी या
 पूष्य धू प दी पा ता मूल ने व द्या दि ना रु य की त्या दि म रु ल य थ वि वि द्या नि धा य प ल म्ब इ र्म नि व ॥ अ कि क री ॐ ह्या दि
 सा रू ला क्रा व र्ण पा र्थ ये ॥ वि धि दी न क्रिया दी न प रित्या क म रु ति वि सृज्ये ॥ पूष्य म र्क रू दी त्या उँ य ॥ अ य न म ४ ॥ ॐ

गान्ध्यानिष्ठकिये ॥ गत ॥ उल्लिख्य विवर्तितं लुण्ठयित्वा पृथक् पृथक् । कृत्वा समकल्पितं मष्टिनिष्ठं किञ्चित् ॥ गत ॥
 परं स्नानं स्वस्नानं विवर्तितं । वज्रशालाजलवद्धौ निष्ठे गतं नृनय ॥ ॐ ह्युक्तं नृनयं वाद्यं वज्रधापकीठाकीठ
 कर्मगलपवर्नं शाताजलसमीपमीत्वा ॥ इत्येदं किञ्चिन्मात्रं ॥ स्नानं गच्छेत्तु ॥ सन्तानं प्यागीतिष्ठ पुनरागमनाय
 ये ॥ ॐ मां पूजा मया दधि यथा गच्छति विदिता । न कल्पेत्तु समादाय वज्रस्नानं मुरुमं ॥ ॐ नि पठि स्वाशागसि पवाद्य ॥ २३
 अथ पूजा स्नानं मागद्य सुषकालिग योलिवनं अथ मय कर्मजल तिलन्यादाय उज्जु शश्विन उक्ता दगमा निष्पेक्षं गच्छ
 न कल्पेत्तु इति ददीपनिष्ठार्थे दिनं ददिकिञ्चित् नृनयं मर्दं दद ॥ ॐ नि ददिकिञ्चित् दद्यात् ॥ ॥ अथ विजय दगमा ददीपन
 कर्म मयना जिता पूजा विधिः ॥ उज्जु शश्विन उक्ता दगमा विजय कामाक्ष्य वरा जिता पूजा मर्दं कजिष्ठ ॥ ॥ चन्दनादिना हृद
 लकमलमालिख्य गन्धैर्ज्योत्स्ना जितायेत ॥ अथ जिता गच्छ किञ्चित् क्रिया गच्छेत् ॥ वामं उडमायेत् ॥ विजयपिनि

क्वाय च उर्जुं पीतवर्णं सर्वोत्तमं रुचिर्नादकिं वा मया रूपं निगलत्तु मया ॥ ४ ॥ खड्गवर्मधरा मधसुलल्लस्यार्धवारुय
 विक्रां शिन्नामीषत्पुरुसिन्नुदना मेघवाजिगाथात्वा डीजूपना जिताथेनमः ॥ पाद्यादिपूजयित्वा हृदयादिषु ७ ॥
 नतादकिं लंजयाथे ॥ वामं विजयाथे ॥ विजयापूजयित्वा क्षुपदीपनामूलवस्तुनि निवेशयेत्तम ॥ वारुणा मुख
 पद्मन विविशकनकाक्षला ॥ या स्वदवी निवृत्तु सत्त्विको मानददो रुम ॥ काशुनेन विविशक कयूनेन विना जिता ॥ जयप
 नामदादवी निवृत्तु विगतयत्तम ॥ विजयावमलोत्तम नदीतु विजयं नमः ॥ ५ ॥ निमुखा ॥ ॥ इति ज्योतिर्वर्म इति सिद्धिगति
 त्वर्थकालवद्वा चानादुपवाजिनालगावल यं नद्यादिति निषायाहिलखितकामनया स्त्रीणां वार्य ॥ ॥ समो वा नोदका
 निषेधश्च स्वप्नमादाय उं का वमूत्राय चिदकिं कृम्या ॥ ७ ॥ उं सदापवाजिनाय स्वात्तुलना रुद्रमास्तुता ॥ सर्वकामार्थसिद्धार्थ
 तस्मात्तु वारया म्याह ॥ ८ ॥ वापवाजिनादवी मम सर्वसम ह्यर्थ ॥ पूजिगार्थित्वयि लंथा ममा मुद्रनिर्गदनी ॥ ९ ॥ वापवाजिना

महिमन्त्र ॥ ॐ जयदवि वन्द वि दगम्यामयनाजिग । धारया मि गुज्जदक जयलाशायदृष्टय ॥ वन्दमासुहि वन्दमयिगरी
 पत्राजय । वन्दमासुहि वन्दमयिगरी ॥ ॐ निमन्त्रेण वादी धारयति ॥ ॥ गग० पुणम्या ॥ ॐ मयिपुत्री मयाद
 वि यथमगच्छाति वदिनी ॥ वकार्थमसुदमावमनू गच्छिस्तानमूर्धम ॥ ॐ निविमन्त्रय ॥ ॥ ॐ ह्यपनी जिगायुजा विमिष्ट ॥
 गगानिधेयः ॥ ॐ उलिष्ठ वन्दमासुग दवयनस्तु ॥ ॐ उयययानुमन्त्रग० सुमानव ॥ ॐ उयययानुमन्त्रग० सुमानव ॥ ॐ निमन्त्रेण वादी धारयति ॥ ॥ गग० पुणम्या ॥ ॐ मयिपुत्री मयाद
 कलममकाय गगानेन वासुधाय ॥ ॐ वाविकमदा मने यजमानमहिषि ॥ ॐ य ॥ ॥ मन्त्रमु ॥ ॐ सुनास्ता महिषि ॥ ॥ गग० पुणम्या ॥ ॐ मयिपुत्री मयाद
 नुवन्द विष्णुमद्वरा ॥ वासुधाय ॥ ॐ वाविकमदा मने यजमानमहिषि ॥ ॐ य ॥ ॥ मन्त्रमु ॥ ॐ सुनास्ता महिषि ॥ ॥ गग० पुणम्या ॥ ॐ मयिपुत्री मयाद
 शिर्षगवानयेमवर्षे ॥ निमन्त्रेण वादी धारयति ॥ ॥ गग० पुणम्या ॥ ॐ मयिपुत्री मयाद
 दा ॥ कीर्तिर्नेत्रे ॥ निमन्त्रेण वादी धारयति ॥ ॥ गग० पुणम्या ॥ ॐ मयिपुत्री मयाद